International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 4 March-April 2024

वैश्वीकरण का ग्रामीण युवाओ पर सांस्कृतिक प्रभाव :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

नीरज कुमार पांडेय [1], डॉ अनामिका सिंह[2]
[1]शोधकर्ता, समाजशास्त्र विभाग, एम.एल.के पी.जी कॉलेज बलरामपुर उ. प्र
संबंध - सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु ,सिद्धार्थनगर उ. प्र
[2]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, एम. एल. के पी.जी कॉलेज बलरामपुर उ. प्र
संबंध - सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर उ. प्र
Corresponding Author: - नीरज कुमार पांडेय
DOI- 10.5281/zenodo.11368944

सरांशिका–

इस शोध पत्र के माध्यम से वैश्वीकरण का ग्रामीण युवाओ पर सांस्कृतिक प्रभावःएक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। वैश्वीकरण ने ग्रामीण युवाओ के सांस्कृतिक–सामाजिक मानदंडों को अत्यधिक प्रभावित किया है जिसके परिणामस्वरूप उनके सांस्कृतिक स्तर– खान–पान,पोशाक तथा जीवन–शैली में आधुनिकता के तत्वों का समावेश हो रहा हैं।। वैश्वीकरण युवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा आपस में अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में प्रोत्साहन देता है जिसके परिणाम स्वरुप ग्रामीण युवाओं में नगरी प्रवास को जन्म देता है। वर्तमान में ग्रामीण युवा भौतिकवादी एवं सुखवादी संस्कृति के प्रति अधिक आकर्षित हो रहा है जिसके कारण वह पश्चिमी वेश–भूषा फैशन के रूप में धारण करते हैं जिससे उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होने का सूचक माना जाता है। जिससे उनकी स्थानीय संस्कृति का लोप हो रहा है लेकिन वैश्वीकरण से युवाओ के जीवन स्तर को बेहतर और आसान बनाने में सहायक रहा है।

शब्द कुंजी – वैश्वीकरण, संस्कृति, युवा, ग्रामीण संस्कृति, समाजशास्त्र

प्रस्तावना–

वर्तमान समय में मानव जीवन के लगभग सभी पछ अपने निवासी देश में हजारो और लाखो मील दूर स्थित संगठनों और गतिविधियों और सामाजिक ताने–बाने से प्रभावित होने लगे है। वर्तमान युग में वैश्वीकरण एक सार्वभौमिक घटना रही है वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने ग्रामीण युवाओ के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के मानदंडों को प्रभावित किया है। जिससे ग्रामीण युवाओ में उनके पोशाक, खान–पान तथा भाषा में परिवर्तन हो रहा ह। वर्तमान में जनसंचार के साधनो में वृद्धि के परिणामस्वरूप वैश्वीकरण में वृद्धि हो है। वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीणों के के स्थानीय संस्कृति में भी परिवर्तन के तत्व स्पष्ट रुप से दिखायी देने लगे है। गिडेंस,एंथोनी (1990:60) ने कहा है कि वैश्वीकरण को दुनिया भर में सामाजिक सम्बन्धो में प्रगाढता के रूप मे परिभाषित किया है जो दूरस्थ स्थित क्षेत्रो को इस तरह से जोड़ती है कि सैकड़ो मील दूर होने वाली घटनाओ से स्थानीय घटनाएँ आकार लेती है। या इसके विपरीत स्थानीय घटनाओ से वैश्विक घटनाए प्रभावित होती है गिडेन्स के अनुसार वैश्वीकरण का विस्तार चार तत्वों से जुड़ा हुआ है ये चार तत्व है– पूँजीवाद, अन्तर्राज्य व्यवस्था, सैन्यवाद एव उद्योगवाद। वाटर्स, एम0(1995:87) ने कहा है कि वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था पर जो भौगोलिक दबाव होते हैं, पीछे हट जाते हैं और लोग भी इस तथ्य से अवगत हो जाते है कि अब भूगोल की सीमाएँ अर्थहीन हैं। वैश्वीकरण युवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा आपस में अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में प्रोत्साहन देता है जिसके परिणाम स्वरुप ग्रामीण युवाओं में नगरी प्रवास को जन्म देता है।ग्रामीण युवा शहरों में निवास करने वाले युवाओं को अपना संदर्भ समूह मानने लगे हैं जिस प्रकार शहरी युवा अपनी दिनचर्या को सोशल मीडिया के द्वारा प्रदर्शित करता है और लाइक कमेंट एवं व्यूज देखकर उसे आनंद की अनुभूति होती है इसी दिखावे की संस्कृति में वर्तमान ग्रामीण युवा भी इसके चपेट में आ गया है। इससे वह प्रतिस्पर्धित समाज का सामना न कर पाने के कारण उनके अंदर चिड़चिड़ापन एवं स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में ग्रामीण युवा भौतिकवादी एवं सुखवादी संस्कृति के प्रति अधिक आकर्षित हो रहा है जिसके कारण वह पश्चिमी वेश–भूषा फैशन के रूप में धारण करते हैं जिससे उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होने का सूचक माना जाता है। ग्रामीण युवाओं ने अपने खान–पान में काफी परिवर्तन किया है अब वह फास्ट फूड चाइनीस और इटालियन व्यंजन खाना पसंद करते हैं। वैश्वीकरण के पश्चात पश्चिमी मूल्यो और संस्कृति का अंधानुकरण हुआ है और युवाओं ने इसे अपनी भारतीय पहचान में शामिल किया है जैसा की न केवल आधिकारिक उद्देश्यों के लिए बल्कि की दैनिक जीवन में भी अंग्रेजी भाषा युवाओं के बीच भारतीय भाषाओं पर हावी होती जा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य –

(1) वैश्वीकरण से ग्रामीण युवाओ में खान–पान पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।

(2) वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप ग्रामीण युवाओ के जीवन शैली में हुए परिवर्तन का आकलन करना।

अध्ययन की सीमाए – प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण युवाओं की आयु सीमा 16 वर्ष से 30 वर्ष तक सीमित है।

भौगोलिक परिसीमांकन – प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र गोंडा जनपद के इटियाथोक विकासखण्ड पर आधारित है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन की शोधप्रारूप मुख्यतः अन्वेषणात्मक और वर्णात्मक है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु गोंडा जनपद के इटियाथोक विकासखण्ड का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के लिए साक्षात्कार अनुसूची

एव द्वितीयक स्रोतों के लिए पुस्तकों,डायरियों एवं सरकारी अभिलेखों का प्रयोग किया गया है।

निदर्शन का चयन – वैश्वीकरण का ग्रामीण युवाओ पर सांस्कृतिक प्रभाव में निदर्शन के रूप मे चयनित 60 युवाओ का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार अनुसूची के लिए किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन – प्रस्तुत अध्ययन में सहभागी उत्तरदाता जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के ग्रामीण युवा है। अध्ययन में शामिल किये गए उत्तरदाताओ में 60 प्रतिशत युवक तथा 40 प्रतिशत युवतिया है अध्ययन में उन्ही उत्तरदाताओ को शामिल किया गया है जो ग्रामीण क्षेत्रो में रहते है। साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण से जो निष्कर्ष के रूप जो महत्वपूर्ण परिणाम निकल कर आये है उनका वर्णन निम्नवत है –

सारणी सं –01 उत्तरदाताओं की सामाजिक शैक्षणिक पृष्ठभूमि

क्रम सं0	विवरण	आवृति	प्रतिशत
1.	प्राइमरी	5	8.34
2.	हाईस्कूल	12	20
3.	इंटरमीडिएट	18	30
4.	स्नातक	15	25
5.	अन्य	10	16.66
	योग	60	100

सारणी सं– 01 के अवलोकन से ज्ञात होता है की 8.34 प्रतिशत उत्तरदाताओ की शिक्षा प्राइमरी तक है तथा 20 प्रतिशत उत्तरदाताओ की शिक्षा हाई स्कूल तक प्राप्त किये है,जबकी 30 प्रतिशत उत्तरदाता इण्टरमीडिएट तक शिक्षा ग्रहण की है तथा 25 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की है शेष 16.66 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने उच्च अन्य शिक्षा ग्रहण की है।

सारणी सं –02 वैश्वीकरण से ग्रामीण युवाओ के खान–पान पर प्रभाव

क्रम सं.	खान–पान का विवरण	आवृति	प्रतिशत
1.	फास्ट फूड व्यंजन	32	53.34
2.	चाइनीज या अन्य विदेशी व्यंजन	11	18.33
3.	दक्षिण भारतीय व्यंजन	5	8.33
4.	पंजाबी व्यंजन	7	11.67
5.	अन्य	5	8.33
	योग	60	100

सारणी सं –02 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 53.34 प्रतिशत युवा व्यंजन में फास्ट फूड को खाना पसंद करते है तथा 18. 34 प्रतिशत युवा व्यंजन में चाइनीज और इटालियन खाना पसंद करते है, जबकी 8.33 प्रतिशत युवा व्यंजन में दक्षिण भारतीय खाना पसंद करते है तथा 11.66 प्रतिशत युवा व्यंजन में पंजाबी खाना पसंद करते है शेष 5 प्रतिशत युवा कॉफी और कोल्ड ड्रिंक पीना पसंद करते है

सारणी सं – 03 युवाओ का आधुनिक वेश–भूषा के प्रति आकर्षण

क्रम सं0	विवरण	आवृति	प्रतिशत
1.	आधुनिक दिखना चाहते है	23	38.34
2.	सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए	17	28.33
3.	सुविधाजनक है	11	18.33
4.	सस्ता और टिकाऊ है	6	10
5.	अन्य	3	5
	योग	60	100

सारणी सं – 03 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 43.34 प्रतिशत युवा आधुनिक दिखने के लिए आधुनिक पोशाकों का प्रयोग करते है तथा 28.33 प्रतिशत युवा सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए आधुनिक पोशाकों का प्रयोग करते है, जबकी 18.33 युवा यह मानते है की आधुनिक पोशाक पहनने में सुविधाजनक है शेष 10 प्रतिशत युवा यह मानते है की आधुनिक पोशाक सस्ते और टिकाऊ होते है।

सारणी सं –04 वैश्वीकरण से ग्रामीण युवाओ के जीवन–शैली में परिवर्तन

क्रम सं0	जीवन–शैली में परिवर्तन हुआ है	आवृति	प्रतिशत
1.	ळां	38	63.34
2.	नहीं	22	36.66
	योग	60	100

सारणी सं –04 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 63.34 प्रतिशत युवा मानते है की वैश्वीकरण से उनके जीवन–शैली में परिवर्तन हुआ है। तथा 36.66 प्रतिशत युवा मानते है की वैश्वीकरण से उनके जीवन–शैली में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

सारणी सं –05 वैश्वीकरण का ग्रामीण युवाओ पर सांस्कृतिक प्रभाव

क्रम सं0	विवरण	आवृति	प्रतिशत
1.	रहन–सहन	16	26.67
2.	आधुनिक पोशाक	12	20
3.	रीति– रिवाज	9	15
4.	खान–पान	13	21.66
5	अन्य	10	16.66
	योग	60	100

सारणी सं –05 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 26.67 प्रतिशत युवा यह मानते है कि वैश्वीकरण से उनके रहन–सहन पर प्रभाव पड़ा है तथा 20 प्रतिशत युवा यह मानते है कि वैश्वीकरण वह आधुनिक पोशाकों का प्रयोग करने लगे है, जबकि 15 प्रतिशत युवा यह मानते है कि वैश्वीकरण से उनके रीति– रिवाजो पर प्रभाव पड़ा है तथा 21.66 प्रतिशत युवा यह मानते है कि वैश्वीकरण से उनके खान– पान में प्रभाव पड़ा है शेष 16.67 प्रतिशत युवा यह मानते है कि वैश्वीकरण से अन्य प्रभाव भी पड़े है।

निष्कर्ष–

शोध के परिणामो से प्राप्त अध्ययन के दौरान देखा गया है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से युवाओ में आधुनिक पोशाकों के प्रति आकर्षण पाया गया है। जिसे वे चलचित्रो ,सोशल मीडिया तथा विज्ञापनों में देखते है जिसे वह एक फैशन के रूप में अपनाने के लिए उत्कृष्ट रहते है। वैश्वीकरण युवाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा आपस में अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में प्रोत्साहन देता है जिसके परिणाम स्वरुप ग्रामीण युवाओं में नगरी प्रवास को जन्म देता है। ग्रामीण युवाओ के खान–पान में फास्टफूड का चलन कभी तेजी से बढ़ रहा है युवाओ में नए व्यंजनों के स्वाद लेने में कभी उत्सुक है। वैश्वीकरण के इस दौर में ग्रामीण युवा आधुनिक समाज के साथ जुड़ने में हर सार्थक प्रयास कर रहा है लेकिन ग्रामीणों की स्थानीय संस्कृति का लोप हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गिडेंस, एंथोनी (1990) दि कांसीक्वेंशेस ऑफ माडर्निटीय कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस. पृ0– 60
2. वाटर्स, एम0.(1995), ग्लोबलाइजेसन, लंदनः रूटलेज ,पृ0– 87
3. सिंह, योगेंद्र (2000). भारत में सामाजिक परिवर्तन, जयपुरः रावत पब्लिकेशन, पृ0– 188
4. नैय्यर, डी0, (2002), गवर्निंग ग्लोबलाइजेसनः इश्यूज एंड इंस्टीटूशन्स, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस पृ0–187
5. दोषी, एस. एल., (2007).आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक, जयपुरः रावत पब्लिकेशन, पृ0– 380
6. रावत, हरिकृष्ण (2017), उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोशः जयपुर रावत पब्लिकेशन पृ0–211
7. श्रीनिवास, एम.एन., (1975) सोशल चेंज इन मॉर्डन इंडिया, नई दिल्लीः राजकमल पब्लिकेशन
8. सिंह, रामगोपाल, (2011), 'वैश्वीकरण मीडिया और समाज',पृ0– 2
9. भार्गव, नरेश. (2014), 'वैश्वीकरण समाज शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' जयपुरः रावत पब्लिकेशन, पृ0–91
10. सिंह, अमित कुमार, (2010),'भूमंडलीकरण और भारत परिदृश्य और विकल्प', पृ0 111
11. चतुर्वेदी, डॉ० अनूप, (2013), 'वैश्वीकरण का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव'